



टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

नवम्बर 2024 वर्ष 28, अंक 11 □ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 □ विक्रमी सम्बत् 2081 □ कुल पृष्ठ 08
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com □ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये □ वार्षिक शुल्क 200 रुपये □ आजीवन 1000/-रुपये

1857 के सूत्रधार महर्षि दयानन्द

□ पं. उम्मेद सिंह विशारद

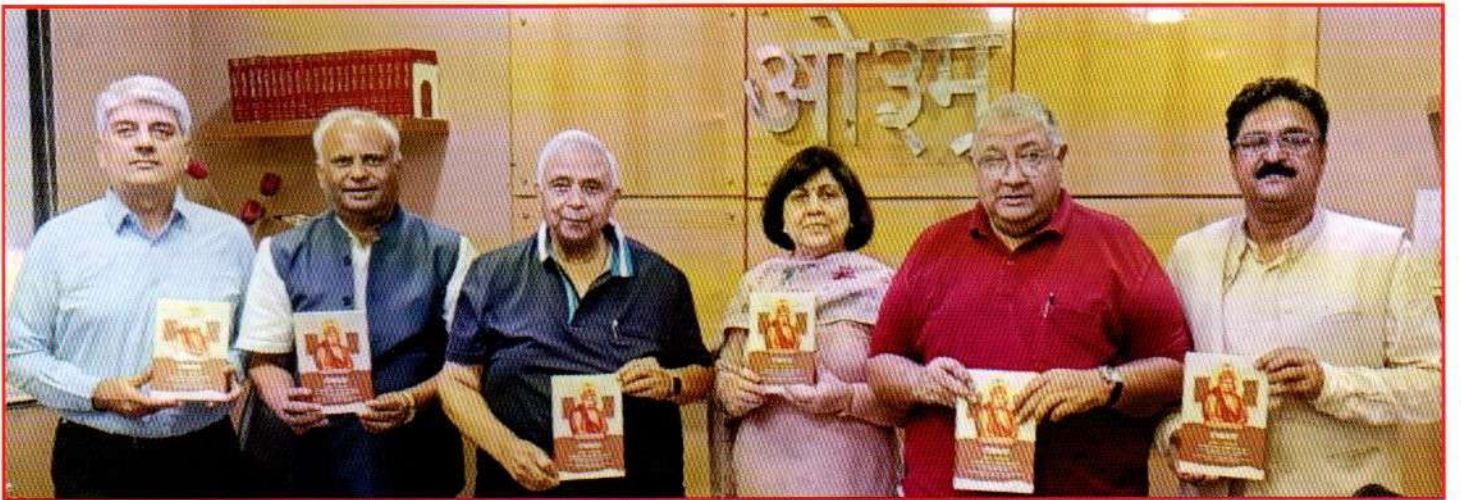
सन् 1857 की स्वतन्त्रता आन्दोलन की क्रान्ती का असफल होने का कारण भीतर घात था और देश द्रोहियों के कारण असफलता मिली थी। इस क्रान्ती को अंग्रेजों ने बुरी तरह कुचल दिया था और स्वतन्त्रता का नाम लेना भी भयानक था, वन्दे मातरम का नारा सुनते ही अंग्रेजी शासन उन्हें गोलियों से मार कर पेड़ों पर लटका देते थे। ऐसे विकट समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन नवजागरण किया था। 1857 से 1947 तक लाखों वीर शहीद हुए और लाखों ने भारत माता का तिलक अपने गरम-गरम रक्त से किया था। महर्षि की प्रेरणा से स्वतन्त्रता आन्दोलन का सूत्रधार हुआ। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 1853 की क्रान्ती का विवरण इसी लेख में आगे लिखेंगे, पहले हम अंग्रेजी शासन के गवर्नर लार्ड मैकाले के सफेद झूठ में प्रकाश डालते हैं।

लार्ड मैकाले का सफेद झूठ कि आर्य बाहर से आये थे-

लार्ड मैकाले ने भारत की शिक्षा पद्धति को ही बदल दिया था, और पाठशाला में के पढ़ाने जाने लगा कि भारत के आर्य सर्वप्रथम बाहर से आये थे और भारत पर काबिज हो गये। हमारी तो जन्म भूमि, कर्म भूमि, धर्म भूमि यही आर्यावर्त (भारत) है। यहीं पर सर्वप्रथम ईश्वर ने मानव की उत्पत्ति की थी, यही पर चार ऋषियों को वेद ज्ञान दिया था, यहीं पर ऋषि पतंजली ने व्यास ने दर्शनों का बोध कराया था, इसी धरती पर मार्यादा पुरषोत्तम श्री राम और योगीराज श्री कृष्ण ने जन्म लिया था, यहीं पर महात्मा बुद्ध ने मानवता का पाठ पढ़ाया था, यहीं पर कुमारिल भट्ट ने वेदों की रक्षा की थी, यहीं पर छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, भामा शाह, पृथ्वीराज चौहान, यही पर महारानी पदमनी, दुर्गा, मदालसा, द्रोपदी, अनुसूया, गान्धारी यहीं पर परम विदुषियां हुई हैं। यहीं पर झांसी की रानी, लक्ष्मीबाई रणचन्डी हुई हैं। इसी धरती पर

(शेष पृष्ठ 7 पर)

टंकारा वैदिक दैनन्दिनी का लोकार्पण पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी द्वारा



डॉ. वी.के. चोपड़ा, डॉ. वी. सिंह, पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी, डॉ. निशा पेशिन, श्री अजय सहगल एवं श्री पवन शर्मा।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आनन्दित जीवन की दिनचर्या

- पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकत्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

जीवन में सफलता का एक महान सूत्र है अपनी जीवनचर्या को सात्विक और संयमित बनाना। धर्मानुकूल जीवन ही हमें आत्मिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत बल प्रदान करता है। संस्कार, संस्कृति, प्रकृति और प्रवृत्ति मनुष्य के जीवन निर्माण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। जिनका जीवन संयमित, अनुशासित और नियमित है उन्हें ही परमानन्द की प्राप्ति हो सकती है। समय के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करके ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। क्षण भर का भी प्रमाद (आलस्य) नहीं करना चाहिए क्योंकि कब मृत्यु आ धमके।



या नहीं। सज्जनता से व्यवहार करने वाला तथा पूर्ण मनोयोग एवं तत्परता से काम करने वाला अवश्य अपने जीवन में सफल होता है। न तो हमें बहुत आशावादी बनकर अपने आपको धोखे में डालना चाहिए और न ही किसी कारणवश हताश होकर घबराना चाहिए। अपने गुणों के अनुसार जीवन में सद्कार्य करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। अच्छा स्वास्थ्य और अच्छा व्यवहार यही हमारे जीवन का ध्येय होना चाहिए। चिंता नहीं चिंतन होना चाहिए। व्यथा नहीं व्यवस्था करनी चाहिए। समय पर सात्विक भोजन और शुद्ध जल का उपयोग करना चाहिए। उचित व्यायाम, ध्यान प्राणायाम एवं विश्राम के लिए प्रतिदिन की जीवनचर्या में

एक दार्शनिक ने ठीक ही कहा है “समय वह धन है जिसे अगर नष्ट करोगे तो समय ही एक दिन आपको नष्ट कर देगा” जीवन का आनन्द लेना है तो जीवनचर्या को नियमित एवं योजनाबद्ध तरीके से जी कर ही ले सकते हैं और तभी समय का सदुपयोग संभव है हम जितने समय तक जीएं-ज्योति बनकर, लपट बनकर जीएं। ज्योति आत्मशुद्धि से आती है और आत्म शुद्धि तक पहुँचने का बहुत महत्वपूर्ण साधन है सद्साहित्य का स्वाध्याय। सद्साहित्य के स्वाध्याय से सद्विचार आते हैं और सद्विचारों से सही सद्बुद्धि आती है और फिर उसके अनुसार सद्कार्य होते हैं। अतः अपनी जीवनचर्या ने प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा स्वाध्याय के लिए आरक्षित रखना चाहिए। जीवन में अपने अज्ञान के कारण समस्याएँ आती हैं। धर्मशास्त्रों के अध्ययन से समस्याओं का निदान होता है। जिसके जीवन में नैतिकता है, ईमानदारी है, प्रामाणिकता है वह ही धार्मिक व्यक्ति है। अपने आपको जानना अपने आपको देखना और अपने आपको समझना ही हमारी जीवनचर्या की सच्चाई है, जीवन का आनन्द है। धर्म का पालन करने वाला जीवित रहकर तो गुणों का अर्जन करता है और मरने के बाद सद्गति को प्राप्त होता है। अपनी जीवनचर्या को इस तरह व्यस्थित रखें कि वर्तमान में ही जीना सीखें अर्थात् हमारा आज अच्छा है तो कल भी अच्छा होगा। दुःख कहीं से नहीं आता है उसे व्यक्ति स्वयं पैदा करता है अहिंसा का जीवन सीखें। अहिंसा जीवन की ऊर्जा है। जीवन का आनन्द है। अपनी जीवनचर्या में स्वार्थ से हटकर परमार्थ की ओर ध्यान देने का दृष्टिकोण रहना चाहिए।

समय सीमित है परन्तु जिम्मेदारियाँ असीम हैं। अतः हमें सदा यह विचार करते रहना चाहिए कि हमारी गृहस्थी का प्रबन्ध ठीक है या नहीं, बच्चों की शिक्षा ठीक हो रही है या नहीं, कुछ सत्कार्य किये हैं

अवश्य उपयुक्त समय देना चाहिए। ईर्ष्या, क्रोध, अहंकार हमारी उन्नति में बाधक है। जीवन में जितनी सरलता होगी, उतना ही लोगों से प्रेम व्यवहार ज्यादा रहेगा। जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है इसके एक-एक पल का उपयोग कर विकास के शिखर पर पहुँचना चाहिए। प्रातःकाल उठते ही सर्वप्रथम प्रभु स्मरण करना चाहिए। घर में अपने से बड़ों को प्रणाम करने की आदत डालकर आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए। अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए अपने दैनिक कार्यों का शुभारम्भ करना चाहिए। अपने व्यक्तित्व को गौरवशाली बनाना चाहिए।

हमें जीवन को हंसते मुस्कराते हुए जीना है। एक अंग्रेजी की कहावत है “हंसोगे तो सम्पूर्ण संसार आपके साथ हंसेगा, किन्तु यदि रोओगे तो आपके साथ रोने वाला कोई नहीं मिलेगा।” हंसना जीवन का आनन्द है। बड़े बुजुर्गों का आदर करते हुए हंसते हंसाते रहिये। हमारी जीवनचर्या में तीन गुण अवश्य रहने चाहिए। 1. क्षमा करना, 2. सहन करना, 3. सेवा करना। जीवन में वास्तव में आवश्यकताएँ तो बहुत कम होती हैं, अपेक्षाएँ ही अधिक होती हैं। व्यसन के जैसा कोई पाप नहीं। व्यसन को छोड़े बिना ईश्वर भक्ति हो ही नहीं सकती। रोज दूसरों में अगर हम गुण देखते हैं तो यह हमारी सज्जनता एवं उदारता है। दूसरों के संकट के समय मदद करना ही मानवता है। किसी को ऐसी बात कभी नहीं कहनी चाहिए जिससे उसका जी दुखे। यदि आप अपना प्रत्येक कार्य ईमानदारी व कर्तव्य परायणता एवं उत्तम चारित्रिक गुण के साथ करेंगे तो आपके हृदय से पश्चाताप लोभ निराशा प्रलोभन, चिंताएँ आदि दूर हो जायेगी और आप आध्यात्मिक उच्च शिखर पर आरूढ़ होकर दिव्य आनन्द, प्रेम, शांति और निर्भयता का अनुभव करेंगे।

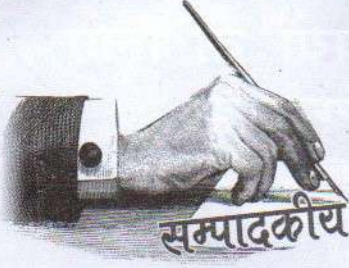
- पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनौचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 25, 26 फरवरी 2025 (मंगलवार, बुधवार) को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-ट्रस्ट मंत्री

कैसे करें सकारात्मक व्यक्तित्व का निर्माण?



यह सर्वविदित ही है कि व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व से ही होती है और व्यक्तित्व का प्रभाव उसके-आचरण पर पड़ता है। हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सुधारने का

पूर्ण प्रयत्न करता है परन्तु कुछ को इनमें सफलता मिलती है तो कुछ को नहीं। व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षा, धर्म, परिवार व समाज का योगदान महत्वपूर्ण है। आजकल इस विषय पर बहुत अधिक साहित्य उपलब्ध है। किसी भी व्यक्ति के अच्छे व्यक्तित्व का व व्यापार एवं उद्योग धंधे पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सामान्यतः हमारे दैनिक कार्यक्रम में आपस में विचार-विमर्श, सकारात्मक दृष्टिकोण, तथा आलोचना करना प्रमुख है। इस लेख के जरिए इसी सम्बन्ध में बढ़ी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों से प्राप्त हुए कुछ अच्छे अनुभव बांट रहा हूँ।

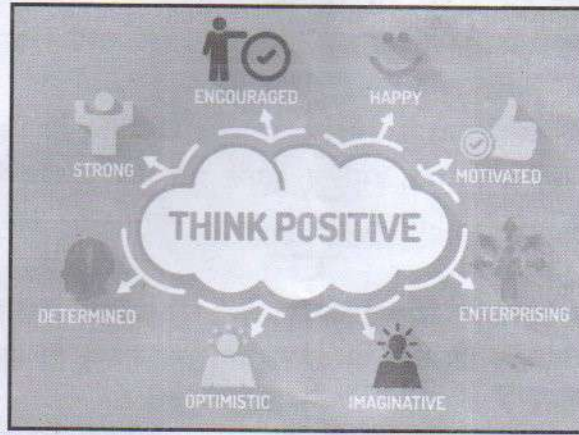
सबसे पहले हम 'आपस में विचार-विमर्श' पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। हमें किस प्रकार विचार-विमर्श चाहिए इस सम्बन्ध में प्रमुख बिन्दुओं को हम यहाँ रख रहे हैं ताकि हर व्यक्ति अपने बातचीत के तौर-तरीकों पर नजर डालकर

इससे तुलना कर सके कि बातचीत करने का ढंग सही है या नहीं? या फिर इसमें कुछ सुधार की आवश्यकता तो नहीं है। मेरा ऐसा विश्वास है कि अगर आप निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देकर उनका अनुसरण करने की कोशिश करेंगे तो हर स्थिति में सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे। कोई भी बात करने से पूर्व हमें किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए। जैसे, वह मेरा मित्र है या मेरा विरोधी, सोचना ठीक नहीं है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर बात करने से विरोधी भी आपकी बात सुनने का प्रयास अवश्य करेगा और वह सोचने के लिए अवश्य मजबूर होगा। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम विषय को लंबा न खींचें। अगर किसी बिन्दु पर मतभेद कम नहीं होते हैं तो उस समय उस विषय को टाल देना चाहिए और आगे के समय का इंतजार करना चाहिए।

आप दूसरों के विचारों को शान्ति से सुनिए। उसे भी ऐसा एहसास होना चाहिए कि उसकी बात सुनी जा रही है। इसके बाद ही आपको अपने विचार प्रकट करने चाहिए। बातचीत के दौरान कुछ स्पष्टीकरण, के लिए आप प्रश्न पूछ सकते हैं, जिससे सामने वाले को भी एहसास होगा कि आप उसकी बात ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं और आपको उसके विचारों को सुनने का पूरा मौका मिलेगा।

किसी भी बात को अधिक बढ़ा चढ़ाकर नहीं कहना चाहिए बल्कि सत्यता पूर्वक बात को रखना चाहिए ताकि सुनने वाला उस बात का सही आकलन कर सके। आपको उत्साहपूर्वक तरीके से अपनी बात को समझाने का प्रयत्न करना चाहिये न कि किसी प्रकार का दबाव

डालकर। इससे बातचीत में सकारात्मक दृष्टिकोण आएगा। बातचीत में लचीलापन भी होना चाहिए अगर इसकी आवश्यकता महसूस होती हो। आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की बात को भी महत्व देकर उससे सहमति जतानी चाहिए। बात को सुचारु रूप से चलाने के लिए छोटी-छोटी बातों पर कठोर रवैया नहीं अपनाना चाहिए और सहमति का भाव रखना चाहिए, साथ ही मूल सिद्धान्तों से बहुत परे भी नहीं जाना चाहिए। बातचीत के दौरान अगर किसी विषय पर परस्पर विचार नहीं मिल रहे हैं तो उसे अपनी प्रतिष्ठा का विषय नहीं बनाना चाहिए। उस समय सम्बन्धित चर्चा को टालकर आगे के समय का इंतजार करना चाहिए। इससे दोनों पक्षों में तनाव उत्पन्न नहीं होगा और मूल विषय पर पुनः आने के लिए विवश होना पड़ेगा।



बातचीत के दौरान सामने वाले को या अपने विरोधी को, अगर वह आपके विचारों से सहमति जताने की कोशिश कर रहा है, तो उसे आप सम्मानपूर्वक मौका देकर उसे आने वाले विचारों को वापस लेने का मौका दीजिए, ताकि उसके अहम् पर चोट न लगे। अगर आपने उसके विचारों को नकार दिया तो यह बहुत हानिकारक हो सकता है, उसके अहम् को चोट लग सकती है, जिससे आगे के लिए बातचीत का माहौल खराब हो सकता है।

आपकी छवि ऐसी होनी चाहिए कि वादों को विनीत भाव में बदल दे, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो। विनीत भाव अच्छे चरित्र से निकलता है और वह व्यक्ति के विश्वास में बदल जाता है। बिना विनीत भाव के संबंध छिछले व हल्के-फुल्के हैं।

बातचीत के दौरान कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए बल्कि नरम शब्दों के विषय को दृढ़ता से रखना चाहिए। जोर से बोलकर या चिल्लाकर विषय को कमजोर न करें, इससे विषय का वजन बिल्कुल समाप्त हो जाएगा। बातचीत के दौरान निम्नांकित तरह के वाक्यों को काम में लेने से वातावरण सौहार्दपूर्ण बन सकता है, जैसे 'मुझे ऐसा लगता है', 'शायद मैं गलत होऊँ', 'अगर आप इसको इस तरह से सोचें तो....', 'आप इस विषय पर और ज्यादा प्रकाश डालें तो अच्छा रहेगा' इत्यादि। भरोसेमंद बलिए और वफादारी से काम कीजिए। एक पुरानी कहावत भी है कि 'एक औंस वफादारी कई पौंड चालाकी से बेहतर है।' काबिलियत महत्वपूर्ण है, परन्तु भरोसेमंद होना बहुत आवश्यक है। भूलने और माफ करने की आदत बनानी चाहिए तथा किसी से बदला लेने की भावना का त्याग करना चाहिए।

अगर इंसान किसी को माफ करने से मना करता है तो वह बातचीत के लिए दरवाजे बंद कर रहा है, जिसे उसे किसी दिन खोलने की आवश्यकता भी पड़ सकती है। बदला लेने की भावना रखना या दूसरों के प्रति विरोधी भावना रखकर बातचीत करने से हम अपना ही नुकसान कर रहे हैं। जिन्दगी का समय छोटा है, इस छोटे से समय को बदला लेने में गुजारना लाभदायक नहीं है। इसे सदा ध्यान में रखिए, नहीं तो सारा जीवन ही तनावपूर्ण हो जाएगा।

अजय टंकारावाला

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के
एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये दें

□□□

गौ-दान : महा-दान-उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान
करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु दें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते हैं।)

□□□

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं
पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

□□□

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि
आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान दें उससे अतिरिक्त यह 1000/- रुपये राशि अवश्य दें।

□□□

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए
सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

□□□

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

□□□

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

□□□

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा
स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते हैं।

□□□

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 G के अन्तर्गत मान्य है।
एवम् C.S.R. दान प्राप्त करने हेतु पंजीकृत।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज
(अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते
पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300
में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर दें।

—:निवेदक:—

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

शिखा या चोटी की महिमा

□ कृष्णादेवी शर्मा

सबसे ऊँचे स्थान या शिखर पर रखने से इसका शिखा नाम व ऊँचे स्थान पर रहने से चोटी कहलाती है। शिखिम्यः स्वाहा (अथर्ववेद 19/22/15) अर्थात् चोटी रखने वालों का कल्याण हो।

गृह्यसूत्रों में मुण्डन का समय तृतीय वर्ष और प्रथम वर्ष है। 'तृतीय वर्षे चोलाम्।' अर्थात् तृतीय वर्ष में मुण्डन किया जाता है। (अश्वलायन गृह्य सूत्र 1/17/1)। 'सावत्सरिकस्य चूडाकरणम् (पारस्कर गृह्यसूत्र 2/1/1) अर्थात् एक वर्ष के बालक का मुण्डन किया जाता है।

चूडाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः। प्रथमेऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं श्रुति चोदनात्॥ (मनुस्मृति 2/35) (सर्वेषाम् + एव द्विजातीनां चूडाकर्म) सभी द्विजातियों=ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्णों के इच्छुकों का (चूडाकर्म) मुण्डन संस्कार (धर्मतः) धर्मानुसार (श्रुतिचोदनात्) वेद की आज्ञानुसार (प्रथमे+अब्दे) प्रथम वर्ष में (वा तृतीये) अथवा तीसरे वर्ष में (कर्तव्यम्) कराना चाहिए। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत है कि मुण्डन बालक को जन्म के तीसरे वर्ष वा एक वर्ष में करना। उत्तरायणकाल शुक्ल पक्ष में जिस दिन आनन्द मंगल हो, उस दिन यह संस्कार (कर्तव्यम्) कराना चाहिए। (संस्कार विधि चूडाकर्म प्रकरण)। प्रथम बार सब केश कटवा देने चाहिए, दूसरी बार के केश रखने उत्तम होते हैं। बालकों के दांत निकलने के समय ज्वर, अतिसार, वमनादि रोग बहुत सताते हैं। वह मुण्डन कराने से नहीं होते। अतः पहली बार सभी सिर के केश मुण्डवा दिये जाते हैं। दांत निकलने का समय एक से तीन वर्ष ही है।

केशान्तः षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते/राजन्यवन्धोर्द्वाविंशे वैश्यस्य द्वेधाधिके ततः। (मनुस्मृति 2/65) (ब्राह्मणस्य) ब्राह्मण के (षोडशे) सोलहवें (राजन्यवन्धोः द्विंशे) क्षत्रिय के बाईसवें (वैश्यस्य) वैश्य के (ततः द्विधाधिके) उससे दो वर्ष अधिक अर्थात् चौबीसवें (वर्षे) वर्ष में (केशान्तः विधीयते) केशान्त कर्म=केश मुण्डन हो जाना चाहिए। अर्थात् इस विधि के पश्चात् केवल शिखा के रखके अन्य दाढ़ी, मूँछ और सिर के बाल सदा मुंडाते रहने चाहिए अर्थात् पुनः कभी न रखना। और जो शीतप्रधान देश हो, तो कामचार है, चाहे जितने केश रखे। जो अति उष्ण देश हो तो शिखा सहित सब छेदन करा देना चाहिए, क्योंकि सिर में बाल रहने से उष्णता अधिक होती है और उससे बुद्धि कम हो जाती है। दाढ़ी, मूँछ रखने से भोजन पान अच्छी प्रकार नहीं होता, और उच्छिष्ट भी बालों में रह जाता है। (सत्यार्थ प्रकाश, दशम समुल्लास) और जो विद्या के विरुद्ध 'यज्ञोपवीत' और 'शिखा' को छोड़ मुसलमानों, ईसाइयों के सदृश बन बैठना व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहनते हो और तमगों की इच्छा करते हो, तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था? (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास)।

शिखा सिर के सबसे ऊँचे उठे हुए भाग के मध्य रखी जाती है। जहाँ बच्चों के सिर पर भंवर रूपी बाल होते हैं, वही स्थान तथा उसके निकट चोटी रखी जाती है। "याज्ञिकैर्गौदणिं मार्जनिं गोकुश्रवच्च शिखा" (यजुर्वेदीय कठशाखा) अर्थात् तुरन्त ब्याही हुई गाय के बछड़े के पैर के खुर की जितनी चौड़ाई और मोटाई होती है, उतने स्थान पर चोटी रखनी चाहिए, क्योंकि लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र का स्थान भी इतना ही होता है। "स्त्रीणां केशधारणमेव शिखाधरणम्"

स्त्रियों का केश रखना ही शिखा धारण करना है।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च। विशिखो व्युपपत्तिश्च यत् करोति न तत्कृतम् (कात्यायन-स्मृति 1/4) अर्थात् सदैव यज्ञोपवीत धारण किये रहना चाहिए। बिना शिखा धारण करना है।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च। विशिखो व्युपपत्तिश्च यत् करोति न तत्कृतम् (कात्यायन-स्मृति 1/4) अर्थात् सदैव यज्ञोपवीत धारण किये रहना चाहिए। बिना यज्ञोपवीत के कभी न रहे, और सदैव चोटी को गांठ लगाकर रखना चाहिए, क्योंकि बिना चोटी के और बिना यज्ञोपवीत के यदि कोई धार्मिक कृत्य करता है, वह न करने के समान ही है।

शिखा हमारी ज्ञानशक्ति को बढ़ाती है और उसे चैतन्यता प्रदान करती है। शिखा के स्थान के नीचे बुद्धि चक्र है और इसी के पास ब्रह्मरन्ध्र है। बुद्धिचक्र एवं ब्रह्मरन्ध्र के ऊपर सहस्रदल कमल में अमृत रूपी ब्रह्म का अधिष्ठाता है। ध्यान से समुत्पन्न अमृत तत्व वायु वेग से सहस्र दल कर्णिका में प्रविष्ट होकर सिर से बाहर निकलने का प्रयत्न करता है। इस समय यदि शिखा में ग्रन्थि लगी हो, तो वह अमृत तत्व सहस्रदल कर्णिका में ही रह जाता है। अतः शिखा में ग्रन्थि लगाना आवश्यक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पंचमहायज्ञ विधि में लिखा है- गायत्री मंत्र से शिखा को बांध कर रक्षा करें। इसका प्रयोजन यह है कि इधर-उधर केश न गिरें, सो यदि तो केशादि पतन न हो तो न करे। और ना रक्षा करने का प्रयोजन यह है कि से परमेश्वर प्रार्थित होकर सब भले से कामों में सदा सब जगह में हमारी रक्षा करे। पूर्ण वैराग्य होने पर संन्यास लेते हैं। संन्यासी शीत और उष्ण के सहने में अभ्यस्त होते हैं। लगभग पिचहत्तर वर्ष की आयु में संन्यास लेते हैं। इस दीर्घकाल में लघु मस्तिष्क, सुषुम्णा और ज्ञानकेन्द्र परिपक्व अवस्था में आ जाते हैं। जो ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास लेते हैं, वे तो स्मरण शक्ति के पुंज होते हैं। संन्यासी सदैव ब्रह्म में लीन रहते हैं। अतः उन्हें चोटी के अभाव में हानि नहीं होती। इसलिए संन्यासी चोटी नहीं रखते।

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः। (यजुर्वेद 16/29) अर्थात् जटाजूट केश रखने वाले को नमस्कार हो, और जिसने सम्पूर्ण केश पूर्ण रूप से मुंडवा दिये हैं, उसे नमस्कार हो। जिस स्थान पर शिखा रखते हैं, उस स्थान से नीचे मस्तिष्क, मस्तिष्क और सुषुम्णा नाड़ी रहती है। शिखा लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्रों की सुरक्षार्थ रखी जाती है। वृहत् मस्तिष्क-यह कुछ अण्डे के समान आकार वाला होता है। इसका पिछला भाग अगले भाग की अपेक्षा अधिक चौड़ा और मोटा होता है। इसमें अनेक नाड़ियां होती हैं, जिनके द्वारा हम देखना, सुनना, सूँघना, बोलना आदि कार्य करते हैं। यदि वृहत् मस्तिष्क की ये नाड़ियां अपना कार्य करना छोड़ दें, तो हमारा देखना, सुनना, सूँघना और बोलना आदि कार्य नहीं हो सकते।

लघु मस्तिष्क- इसकी आकृति पिचके गोले के समान होती है। यह वृहत् मस्तिष्क के नीचे रहता है। जब शरीर में कोई गति, मांसपेशियों का संकोच व विस्तार होता है तो इस परिवर्तन की सूचना (शेष पृष्ठ 7 पर)

लौंग के प्राकृतिक गुण

लौंग का धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्व है क्योंकि किसी पूजा अनुष्ठान में लौंग का जोड़ा अर्पित किया जाता है। लौंग को घी के साथ मिलाकर दीपक के साथ जलाकर पूजा करते हैं। लौंग को सुगंधित होने के कारण सभी स्त्री पुरुष पसंद करते हैं। लौंग को पान के साथ सेवन करने से भीनी-भीनी सुगंध से मन प्रफुल्लित हो उठता है। मुँह से दुर्गंध आने पर लौंग को चूसने से दुर्गंध का निवारण होता है, इस सबके अतिरिक्त लौंग अत्यंत गुणकारी वनौषधि है। देश के दक्षिण भाग में लौंग के वृक्ष उगाये जाते हैं, लेकिन उन वृक्षों से उत्तम किस्म की सुगंधित लौंग प्राप्त नहीं होती है इसलिए विदेश से लौंग का आयात किया जाता है। लौंग के वृक्ष 30-40 फुट ऊँचे होते हैं और हर समय हरे-भरे रहते हैं। लौंग के वृक्ष से भीनी-भीनी सुगंध आती है। इसके पत्ते भी सुगंधित होते हैं। वृक्षों पर तीन-तीन गुच्छों में कलियाँ खिलती हैं तो फूल निकलते हैं। लौंग के वृक्ष से बिना खिली कलियों को तोड़कर छाया में सुखाकर लौंग के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। लौंग के वृक्ष पर वर्ष में दो बार 6-6 महीने के अंतराल से लौंग की उत्पत्ति होती है। लौंग के वृक्ष अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में होते हैं। जंजीबार से लौंग का सबसे अधिक आयात किया जाता है। बाजार में कुछ लोग ऐसी लौंग भी बेचते हैं, जिनसे पहले ही तेल निकाल लिया जाता है। ऐसी लौंग गुणकारी नहीं होती है। अधिकांश घरों में लौंग का इस्तेमाल व्यंजनों को सुगंधित व स्वादिष्ट बनाने के लिए किया जाता है। विभिन्न प्रदेशों में लौंग को विभिन्न नामों से संबोधित किया जाता है। संस्कृत में लौंग को लवंग, देवकुसुम, वारिपुष्प, ग्रहणीहर कहा जाता है। बंगाली, मराठी और गुजराती में भी लवंग कहते हैं। तमिल में किशंबु, अंगरेजी में और लैटिन में साईजिगियम ऐरोमेटिकम कहा जाता है।

आयुर्वेदानुसार लौंग के गुण- आयुर्वेद चिकित्सा के विभिन्न ग्रन्थों में लौंग के गुणों को विस्तृत रूप में वर्णित किया गया है, प्रसिद्ध ग्रंथ, 'भाव प्रकाश' के अनुसार लौंग चटपटी, कड़वी, शीतल, दीपन, रुचिकारक, पाचक और कफ-पित्त-रोग-विकार नाशक होती है। लौंग के सेवन से उदर के वायु, विकार, शूल, कास (खाँसी की विकृति), श्वास और हिक्का (हिचकी) रोग में बहुत लाभ होता है। लौंग मूर्च्छा को नष्ट करती है। क्षय रोग में लौंग बहुत लाभ पहुँचाती है। अन्य चिकित्सा ग्रंथ 'राजनिघंटु' के अनुसार लौंग मधुर, शीतवीर्य, त्रिदोष नाशक, उष्ण, तीक्ष्ण और कास को नष्ट करने वाली वनौषधि है।

लौंग का पाचन क्रिया पर तीव्र प्रभाव पड़ता है। लौंग के सेवन से अरुचि नष्ट होती है क्योंकि लौंग की सुगंध अधिक आकर्षित करती है। लौंग के सेवन से भूख अधिक लगती है लौंग में कृमियों को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति होती है। आमाशय की रस-क्रिया को अधिक शक्ति मिलती है। लौंग स्नायु-तंत्र को शक्ति देता है। लौंग के सेवन से वायुनलियों का संकोच व विकास कम होता है, शूल निवारण होता है।

मुख और कंठ रोगों के लिए लौंग अधिक गुणकारी होती है। मुँह की दुर्गंध नष्ट होती है और गले के विकार नष्ट होते हैं। मूत्रल गुणों के कारण लौंग के सेवन से मूत्र द्वारा शरीर से विजातीय द्रव्य निष्कासित होते हैं। दाँतों में दर्द होने पर एक लौंग को उस दाँत के साथ रखा जाये तो दर्द नष्ट होता है। लौंग का तेल लगाने से भी शीघ्र दर्द नष्ट होता है। लौंग के तेल से गर्भावस्था में वमन प्रकोप कम होता है। लौंग का

तेल उदरशूल, आध्मान (अफारा) और दूसरे वायु विकारों में सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

पॉयरिया रोगी के लिए लौंग का तेल बहुत लाभप्रद होता है। लौंग का तेल मसूढ़ों पर मलने से शोथ नष्ट होते हैं, सड़ने की क्रिया से उत्पन्न जीवाणु नष्ट होते हैं। किसी भी टूथपेस्ट के साथ लौंग के तेल की दो-तीन बूँदें सेवन करने से मसूढ़े स्वस्थ व निरोग रहते हैं। यूनानी चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार लौंग उष्ण (गरम) और उत्तेजक होती है, पाचन शक्ति को विकसित करती है, किसी जन्तु के काटने व स्पर्श करने पर तीव्र पीड़ा व जलन से लौंग मुक्ति दिलाती है, विष को नष्ट करती है। लौंग को पीसकर, हल्के गरम पानी में मिलाकर पिलाने से वमन का प्रकोप कम होता है।

औषधीय उपयोग- लौंग को जल के साथ पीसकर गरम जल में मिलाकर पिलाने से तृषा (अधिक प्यास) और जी मिचलाने की विकृति नष्ट होती है। □ लौंग के तेल की मस्तक पर मालिश करने से सिर-दर्द नष्ट होता है। □ लौंग और हल्दी को पीस कर लगाने से नासूर में बहुत लाभ होता है। □ लौंग को 200 ग्राम जल में देर तक उबालें। 50 ग्राम जल शेष रह जाने पर छानकर पीने से वायु विकार (गैसे) और पेट का दर्द नष्ट होता है। □ शरीर के किसी भाग पर शोथ होने पर लौंग का तेल मलने से लाभ होता है। □ लौंग को मुँह में रखकर रस चूसने से खाँसी का प्रकोप शांत होता है। जब तक मुँह में लौंग रहती है खाँसी बंद रहती है। □ लौंग के तेल की कुछ बूँदें किसी स्वच्छ टुकड़े पर टपकाकर, उस कपड़े को बार-बार सूँधने प्रतिश्याय (जुकाम) की पीड़ा नष्ट होती है। नाक बंद नहीं होती है, रोगी को आराम मिलता है। □ एक रत्ती लौंग को पीसकर, मिश्री की चाशानी में मिलाकर चाटकर खिलाने से गर्भवती स्त्री को वमन विकृति में बहुत लाभ होता है। उबकाइयाँ बंद होती हैं। □ लौंग को मुँह में रखकर चूसने से श्वास की दुर्गंध नष्ट होती है। □ लौंग को बकरी के दूध में घिसकर, नेत्रों में काजल की तरह लगाने से रतौंधी रोग नष्ट होता है। □ लौंग, चिरायता-दोनों को बराबर मात्रा में जल के साथ पीसकर पिलाने से ज्वर नष्ट होता है। □ लौंग और हरड़ को जल में खूब देर तक उबालकर क्वाथ (काढ़ा) बनाकर थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर पानी से अजीर्ण में बहुत लाभ होता है। □ वात विकार व संधि-शूल (जोड़ों के दर्द) में लौंग का तेल मलने से पीड़ा नष्ट होती है। □ लौंग को आग पर भूनकर, कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर मधु मिलाकर चाटने से कुक्कुर (काली) खाँसी में बहुत लाभ होता है। □ लौंग को जल के साथ पीसकर 100 ग्राम जल में मिलाकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से हृदय की जलन विकृति नष्ट होती है। □ लौंग को जल के साथ पीसकर माथे और कनपटियों पर लेप करने से स्नायुविक मस्तक शूल नष्ट होती है। □ बस व रेल के लम्बे सफर में जी मचलाने व वमन होने की स्थिति में लौंग मुँह में रखकर चूसने से बहुत लाभ होता है। □ लौंग के तेल की एक-दो बूँदें बताशे पर डालकर सेवन करने से हैजे की विकृति में बहुत लाभ होता है। □ लौंग को जल में उबालकर, थोड़ा-थोड़ा पिलाने से हैजे की विकृति में वमन का प्रकोप शांत होता है। मूत्र अधिक निष्कासित होता है। □ लौंग को जल के साथ घिसकर, मधु मिलाकर चटाने से खसरे के रोग में बहुत लाभ होता है। (-प्रयोग करने से पूर्व किसी वैद्य की सहमति अवश्य लें)

(पृष्ठ 1 का शेष)

बालमीकी, सूरदास, तुलसीदास, कबीदास, रविन्द्रनाथ टैगोर, सन्त कवि हुए हैं, यहीं पर गुरु गोविन्दसिंह, वीर बन्दा बैरागी, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, वीर सावरकर, सुभाष चन्द्र बोस, पं लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गांधी हुए हैं। यहीं पर योगीराज अरविन्द, बाल गंगाधर तिलक, विपिनचन्द्रपाल, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, स्वामी विवेकानन्द, और क्रान्तीकारी के अग्रदूत, महान समाज सेवक, रूढ़ीवादी को उखाड़ने वाले, बली प्रथा, छुआछूत, जातिपाति के सुधारक, तमाम अन्धाविश्वासों को समाप्त करने वाले, वेदों की ओर लौटाने वाले, स्वतन्त्रता आन्दोलन का पाठ पढ़ाने वाले, सत्य ईश्वर की पूजा कराने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जन्म लिया था। हमारा तो सभी कुछ इस पवित्र धरती पर है। यही हमारी जन्मभूमि धर्मभूमि कर्मभूमि है। यहीं पर आर्य समाज का सर्वोत्तम संगठन है, यहीं पर यहां की संस्कृति व संस्कारों को यदि बचा सकता है तो केवल आर्य समाज ही है। यहीं पर आर्य समाज राष्ट्रीय भावना को जगाता है, और हिन्दू सभा के संस्थापक मदन मोहन मालवीय जी ने कहा था यदि आर्यसमाज दौड़ता है तो हिन्दू समाज चलता है। यदि आर्य समाज चलता है तो हिन्दू समाज बैठ जाता है यदि आर्य समाज बैठता है तो हिन्दू समाज सो जायेगा, यदि आर्य समाज सो गया तो हिन्दू समाज मर जायेगा अर्थात् पुनः गुलाम हो जायेगा।

सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम और महर्षि दयानन्द की सक्रियता- 1857 के स्वाधीनता संग्राम में साधु सन्यासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। इनमें मुख्य भूमिका महर्षि दयानन्द जी की थी। यह सूचना श्री पृथ्वी सिंह मेहता विद्यालंकार ने प्रतिपादित की थी, और पं. दीनबन्धु वेदशास्त्री द्वारा संकलित योगी का आत्मचरित्र में जिसका स्पष्ट रूप से उल्लेख है। सन 1857 के विद्रोह में जो जानकारी मिली थी उसमें साधुओं का परिचय मिला था। ईस्ट इन्डिया कम्पनी के सरकार के सैनिक अफसरों तथा अधिकारियों का सीधा सम्पर्क संघर्ष के इस काल में उन्हीं लोगों का था। यह स्वाभाविक है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की सक्रियता प्रमुख रूप से रही थी उत्तर प्रदेश मुजफ्फरनगर के सर्वखाप पंचायत के महामंत्री चौधरी कबूल सिंह के पास उस पंचायत के पुराने रिकॉर्ड विवरण सुरक्षित दशा में विद्यमान है। मीर मीरासी के पत्र में पंचायत की बैठक का उल्लेख है जो 1956 में हुई थी उसमें नानासाहिब, अजीमुल्ला खां, रंगू बापू और बहादुर शाह का एक शहजादा उपस्थित थे, और उसके सम्मुख स्वामी विरजानन्द ने एक भाषण दिया था। जिसमें अंग्रेजों के शासन की बुराईया प्रकाशित करके स्वराज्य की आवश्यकता बताई गयी थी। निःसन्देह उन साधु सन्यासियों में स्वामी विरजानन्द का महत्वपूर्ण स्थान था जो सैनिकों तथा सर्वसाधारण लोगों को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उठ खड़े होने के लिये प्रेरित कर रहे थे। स्वामी विरजानन्द जी दसनामी सन्यासी थे और उनका सम्बन्ध शंकराचार्य द्वारा स्थापित सन्यासी सम्प्रदाय के साथ था।

श्री दीनबन्धु वेद शास्त्री द्वारा महर्षि जी का आत्मचरित्र प्रकाश में लाया गया है, उसके अनुसार सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की योजना तैयार करने में महत्वपूर्ण कार्य था। 1955 में कुम्भ के अवसर पर नानासाहब, अर्जामुल्लाखां, झांसी की रानी, आदि से हरिद्वार में भेंट की थी और स्वतन्त्रता आन्दोलन पर गम्भीर विचार विमर्श हुआ था। सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम की योजना पद्धति ओमानन्द और पूर्णानन्द

द्वारा तैयार की गयी थी। उसे क्रियान्वित करने में स्वामी विरजानन्द जी का कार्य महत्वपूर्ण था। स्वामी विरजानन्द जी ने जानबुझकर मथुरा को अपना केन्द्र बनाया था। वहां पर स्वामी दयानन्द जी, स्वामी विरजानन्द के नेतृत्व में कार्य करने को तत्पर थे। विरजानन्द जी स्वामी दयानन्द के गुरु थे तथा उनके भी गुरु स्वामी पूर्णानन्द इस स्वतन्त्रता यज्ञ का परोहित्य कर रहे थे। श्री पृथ्वी सिंह मेहता ने सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के महत्वपूर्ण योगदान के सम्बन्ध में कहा था, जिससे अनेक विद्वानों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ था। जिससे सत्यता को मुग्धा कण्ठ से स्वीकार किया था, और कहा था यह यथार्थ घटना है। दैनिक हिन्दुस्तान तथा साप्ताहिक आर्योदय आदि अनेक पत्रों में इस विषय पर लेख प्रकाशित हुए थे, और आर्य समाज के अनेक विद्वान यह प्रति प्रतिपादित करने में तत्पर हो गये थे कि 1857 की क्रान्ती में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने न केवल सक्रिय रूप से भाग ही लिया था अपितु उसका नेतृत्व भी किया था। इस संक्षिप्त लेख में मेरा केवल सभी पाठकों से यह निवेदन कृत्य मात्र है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का स्वतन्त्रता संग्राम की पृष्ठ भूमि में पूर्ण योगदान रहा है जो उनके लिखे अमूल्य ग्रन्थों में भी विदित होता है।

-वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून उत्तराखण्ड, मो. 9411512019

(पृष्ठ 5 का शेष)

त्वचा के तारों द्वारा सुषुम्णा को तत्काल पहुंच जाती है। लघु मस्तिष्क के केन्द्रों द्वारा इन सभी वस्तुओं का ज्ञान हमें प्रति क्षण होता रहता है। यदि सुषुम्णा केन्द्र खराब हो जाय, तो हमें किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता।

शिखा शीतकाल में शीत से, भीषण ग्रीष्म में उष्णता से और चर्षा में जलवृष्टि के आघात से सुषुम्णा आदि की रक्षा करती है। ऊन बाहर के शीत को अन्दर नहीं जाने देती, बाहर की गर्मी को अन्दर नहीं आने देती। ऊनी वस्त्र शीघ्र भीगते नहीं। ऊन का तंतु शरीर के अन्दर की गर्मी को बाहर नहीं आने देता। ऊन विद्युत के प्रभाव को अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर नहीं आने देती।

जैसे तडित्-चालक विद्युत को -अपनी ओर खींच लेता है, उसी प्रकार शिखा भी अन्तरिक्ष में प्रवाहित परमात्मा की ओजस्वी शक्ति को आकर्षित करने में सफल होती है। शिखा अन्तरिक्ष में व्याप्त ऊर्जादायिनी विद्युत-तरंगों को ग्रहण करके मस्तिष्क को आरोग्य और ऊर्जा प्रदान करती है।

शिखा के स्थान पर 'पिट्यूटरी' नामक एक ग्रन्थि होती है। इस ग्रन्थि से शरीर में एक रस का संचार होता है, जो शरीर को हृष्ट-पुष्ट तथा मस्तिष्क को विकसित करता है। अतः इस ग्रन्थि की सुरक्षा शिखा द्वारा होती है। शिखा के द्वारा ब्रह्मरन्ध्र की रक्षा होती है।

श्रीकृष्ण शिखा बढ़ाने के लिए कहते हैं- मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी/किती बार मोहि दुध पिवत भई, अजहूँ है छोटी।।

शिखा हिन्दुत्व की पहचान है। शिखा एकता में सहायक है। शिखा रखने से मनुष्य में सदबुद्धि, सदवृत्ति और सद्विचार की वृद्धि होती है। मनुष्य की नेत्रज्योति सुरक्षित रहती है। आत्मशक्ति प्रबल बनी रहती है। मनुष्य धार्मिक, सात्विक -और संयमी बनता है। अपनी आयु, बल, बुद्धि और तेज की वृद्धि के लिए शिखा अवश्य रखनी चाहिए।

-ग्रा. व पो.- घटायन, जिला- मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

The two most *important days*
in *your life* are
the day you're *born* and
the day you find our *why*.

टंकारा समाचार

नवम्बर 2024

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2024-25-26

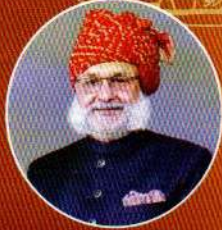
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2024-26

Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-11-2024

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.10.2024



MDH
परिवार की ओर से
दीपावली की हार्दिक
शुभकामनाएँ।



महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हठी (प्रा.) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हठी (प्रा.) लि०



मसाले

सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच



For More Information Visit us on :



mdhspicesofficial



mdhspicesofficial



mdhspicesofficial



SpicesMdh



SCAN FOR MDH
ORIGINAL RECIPES

www.mdhspices.com

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक-अजय सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित।

संपादक : अजय